सुंदर संयोग मे नवीन चेतना

डॉ शैलेन्द्र मोहन मिश्र

मैथिली साहित्य क मध्य काल नाट्य रचना की दृष्टिएं जतबा संपन्न छल ओ धुनिक कालक रंभ मे ओतबे विपन्न । कारण धुनिक काल मे बि हिंदी जगतक पारसी नाटकक सस्त लोकप्रियता तथा मैथिल जीवन मे पांडित्य एवं मर्यादा पालनक प्रवृत्ति ओ शहरी जीवनक सर्वथा अभाव । तैं नाट्य लेखन ओ मंचनक गति नहिये जका छल ।

" एक त मिथिला मे एहन एहन विकसित ओ कास्मोपोलिटन नगरक सर्वथा अभाव छल , दोसर काशी प्रयाग दिस सँ जे पारसी नाटक नौटंकीक बाढि एल ओ मिथिला संस्कृति ओ जीवनक लेल सर्वथा अनुपयुक्त छल तैं मैथिली लेखक के नाट्य विधाक ने कोनो प्रेरणा भेटल ने प्रवृत्ति जागल । पूर्ववर्ती कीर्तनियाँ नाटकक सुदीर्घ परम्परा छल अवश्य , एकर मंचो छल किन्तु व ओकर समय नहि रहि गेल छल तैं साहित्यक ई विधा मंद परि गेल जे किछु गति यल से यल काशीक भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक प्रेरणा सँ। एहि नवीन प्रेरणा सँ पंडित जीवन झा ओ मुंशी रघुनंदन दास मैथिली मे धुनिक नाट्य रचना परम्परा क श्री गणेश कयल ।" 1

 धुनिक मैथिली साहित्य कँ सर्जनात्मक दिशा प्रदान कयनिहार , मैथिली नाटकक धुनिक स्वरूपक प्रणेता जँ जीवन झा कँ कहल जाय त अतिश्योक्ति नहि होयत । बीसम शताब्दीक प्रथम दशक धरि अबैत अबैत मैथिली नाट्य साहित्यक पूर्ववर्ती परंपरा मे क्रांतिकारी परिवर्तन नि परवर्ती युगक नाट्यकार लोकनिक हेतु नवीनताक उन्मेष, प्रगतिशील विचार, सम्बेदनशील मनोवृत्ति , कल्पनाशील मस्तिष्क , सरस रोमांचक अनुभूति एवं मैथिल समाज मे परिव्याप्त समस्याक प्रति अति साकांक्ष भए समाज कँ दिशा निर्देश करबाक स्तुत्य प्रयास कयलनि ओ थिकाह नाटय गद्यक जनक , नाट्य पुरूष कविवर जीवन झा ।

सर्वप्रथम इएह मध्य कालीन मैथिली नाट्य परंपरा कँ नवीन दिशा प्रदान कयल । नाटक मे मैथिलीक संग संस्कृत एवं प्राकृत के मिश्रित करबाक परम्परा कँ तोरि गद्य मे कथोपकथनक प्रयोग कय ओकर कथावस्तु मे नवीनता नल । तथापि ओ अपना कँ संस्कृत नाट्य शास्त्रीय लक्षण सँ फराक नहि राखि सकलाह । शिल्प एवं शैली दुनू दृष्टिएँ ओहि मे परिवर्तन कयलनि । ओ एक दूर दर्शी साहित्य चिंतक सदृश शा निराशाक मिलन विंदु पर जन मानस कँ देखलथिन । ओ नैराश्यक अंधकार मे शाक दीप जरौलनि । ई अवश्य भेल जे अन्य भाषा नाटकक प्रभावक कारणें ताहू मे पारसी नाटकक प्रभावें परिवर्तित भए सामाजिक समस्या सभ कँ ग्रहण कयलक ।

" धुनिक कालक रंभिक चरण मे मैथिली भाषा ओ साहित्यक पुनरुत्थानक जे प्रयत्न , जे ंदोलन रम्भ भेल छल ताहि मे कविवर जीवन झाक योगदान ऐतिहासिक महत्व रखैत अछि ।ऐहि ंदोलन सँ अधिकांश शिक्षित वर्ग

सर्वथा निरपेक्ष छलाह । संस्कृत विद्वान मैथिली कँ भाखा ओ मैथिली सहित्य कँ रजनी सजनी मानि तिरस्कृत कयने छलाह । दोसर दिस धुनिक शिक्षित वर्ग एहि भाषा कँ भर्नाकुलर अर्थात गमारक भाषाक रूप मे हेय दृष्टि सँ देखैत छलाह, एहन परिस्थिति मे जे महानुभाव मैथिली भाषा ओ साहित्य कँ प्रतिष्ठित ओ समृद्ध बनयबाक लेल प्रयत्नशील भेलाह से सभ पूज्य छथि ,वरेण्य छथि ।"२

एहन प्रतिकूल परिस्थिति मे मैथिली नाटकक रचना कए
कविवर जीवन झा ई सिद्ध करबाक प्रयास कयल जे मिथिला मे लोक रूचि जहिना नाटक सँ हटि रहल छलैक से नवीन विषय बस्तुक माध्यमे लोक कँ कृष्ट करैक तथा सामाजिक ज्वलन्त समस्या सँ अवगत भए ओकर समाधान करबाक दिशा मे प्रवृत्त होइक ।

दोसर हुनक नाटकादिक प्रेरणा स्त्रोत छल नवीन जागरणक ज्योति । अपन समाज कँ ओ सजग ँखिये देश देशान्तरक विकासोन्मुख गतिविधि पर दृष्टि निक्षेप कयलनि । एहि विषयक अनुभव कयलनि जे मैथिल समाज मे नव जागरणक अभाव अछि । ई अपन नाटकक कथानकक चयनक निमित्त मिथिलाक सामाजिक , सांस्कृतिक ,एवं र्थिक स्थिति दिस दृक पात कयलनि अपन युगक वास्तविक समसामयिक यथार्थ स्थिति कँ रूपायित कयलनि । हुनक मूल उद्देश्य छलनि जे मातृभाषाक माध्यमे नाटक कँ युगानुरूप बनाय जन जीवनक सन्निकट नब । हिनक सामाजिक सुधारक मनोवृतिक परिचायक थिक । ई एक गोट सामाजिक नाटक थिक । ऐहि मे नाट्यकार समाजक ओहि मानसिक स्थितिक विश्लेषण कयलनि अछि जे जाति पाँजि , कुलीनता ,बिकौ प्रथा , प्रचलित बहु बिवाह पत्नी परित्याग सन विकृति सँ उत्पन्न होइत छल । तथाकथित कुलीन जन अनेक विवाह करैत रहथि । भलामानुस क पत्नीक जीवनक गति इएह छलैक । विवाह कय जाथि जीवन भरि वापस नहि बथि । दाम्पत्य सुख एहन कन्याक जीवन भरि अनुभूत सत्य बनल रहि जाइत छलैक । ओ ने त कुमारिये रहैत छल ने वास्तव मे सधवे ।
डॉ रामदेव झा नाटककारक मूल उद्देश्य कँ स्पष्ट करैत कहैत छथि " मिथिला मे बिकौ कन्यादनी प्रथा वर्तमान शताब्दीक रंभिक चरण धरि पूर्ण सशक्त ओ जीवन्त छल । सामाजिक जीवन मे प्रतिष्ठाक धार छल । जीवन झा एहि परिस्थिति कँ नीक जकाँ देखने छलाह । एकर दुष्प्रभावक अनुभव कयने छलाह । समाजक ओही परिवेशमे कन्यापक्षक विशेषतः परिणिता कन्याक मानसिक अन्तर्द्वन्द्व कँ सुंदर संयोग मे अभिव्यक्त कयलनि ।समाजक सोंझा सुंदर मिश्र सन दर्श पुरुष कँ प्रस्तुत कयलनि ।" 3

तत्कालीन मिथिलाक समाज मे ई विडंबना छल जे समाजमे उच्च बनल रहबाक हेतु जाति पाँजि में उच्चता क अनुसारे बेटी के विवाह कराओल जाइत छल । भले ही कुलीन वर एक विवाहक पश्चात अन्यत्र जाय दोसर विवाह कए फेर तेसर एवं प्रकारे कैकटा विवाह करैत छलाह ओर पलटि कए पुनः ओहि सासुर नहि जाइत छलाह ।

सुंदर संयोगक विषय वस्तुक ताना बाना त ओही तंतु सँ बुनल गेल अछि , मुदा ओहि मे किछु विशेष रूपें देखाओल गेल अछि । नायक सुंदर पण्डित छलाह ,ओ चतुर्थी दिन पत्नी कँ छोड़ि चल गेल रहथि । पत्नी सरला हठात अपन पति के चल गेलाक कारणे अत्यंत दुखी भ गेल छलीह । सुंदर पुरश्चरण करबाक हेतु बाबाधाम अबैत छथि एहि क्रममे ओ डेढ वर्ष धरि गाम नहि जाइत छथि संगहि पत्नियोक खोज पुछारी नहि करैत छथि ।

एम्हर सासुर मे सासु ससुर सेहो जमायक बिनु किछु कहने चलि गेला सँ हत छलाह । विचार भेलनि जे बाबा बैद्यनाथक शरण मे जा हुनका सँ निवेदन करी । एहि क्रममे ओ सभ बाबाधाम अबैत छथि । जाहि पंडाक ओहिठाम डेरा लैत छथि ओही ठाम सुंदर सेहो रहैत छलाह । ओ पंडाक द्वारा हुनका लोकनिक परिचय पुछबाक क्रममे चिन्ही जाइत छथि।

एहि ठाम न बिकौ वर जँका नहि बल्कि एक दर्श पुरूषक रूपमे नाटककार सुंदर के प्रस्तुत कयलनि अछि । सुंदरक व्यवहार कुशलता सँ सरस्वती प्रभावित भए जाइत छथि । तैं जखन पंडाइन संकेत करैत छथिन जे पंडित बाबू सरलाक वर थिकथिन तखन हुनक निराशा व्यक्त होइत छनि ।

सरस्वती- " एहन भाग हमर कँहा जे जमाय के देखब परन्तु बैद्यनाथ बड़ गोट थिकाह । " 4
दर्शन करबाकाल सरला जखन मंदिर मे अचेत भए जाइत छथि त सुंदर हुनका कोरा मे उठा डेरा अनैत छथि , एवं प्रकारें भेद खुजैत अछि बिछुड़ल पति पत्नीक सुंदर मिलन होइत अछि ।

सरला अपन पति कँ विवाहक बाद कहियो नहि देखने छलीह तैं ओ पंडाक डेरा पर अपन पति कँ नहि चिन्ही सकली । मुदा जखन अपन सखी द्वारा सुंदर बाबू के बियनि हौंकबाक ग्रह पर बियनि हौंकए लगैत छथि त अंतर्मन मे हुनका देखि एक प्रकारक द्वंद्व चलय लगैत छनि -
सरला - " एहि पुरुष कँ देखि हमर मन कपैये किये ? हे बैद्यनाथ! ऐ तरहें दुखिनी कँ किए सतबै छहक ? ने एहि ठाम सँ जा होइए ने बैसने थीर रहि सकै छी , हमर ँखि एहि मुँहचाँद लै चकोर भेल अछि । " 5

ऐहि ठाम नाटककार सुंदर मे दर्श पतिक प्राण प्रतिष्ठा कय समाज के कांता सम्मति उपदेश देलनि अछि जे हिनक सुधारवादी दृष्टिकोंणक परिचायक थिक । किएक त जे व्यक्ति विवाह कए जाइत छलाह से पलटि कए सासुर जएबाक

प्रयोजन नहि बुझैत छलाह ने पत्नीक प्रति कोनो कर्षण रखैत छलाह । भगवानक भरोसे ओहि बाला कँ जीवन घुलैत रहबाक हेतु छोड़ि दैत छलाह ।मुदा एहि नाटकक नायक पंडा जी क ओहि ठाम अपन सासुरक प्रत्येक व्यक्ति कँ चीन्हि जाइत छथि । अपन पत्नी कँ चिन्ही जाइत छथि । पत्नी कँ देखितहि हुनका प्रति स्वतः कर्षित भए जाइत छथि ,ओ अपन मनोभाव कँ व्यक्त करैत कहैत छथि -

सुंदर - " ओह ! जीवित प्रियाक वियोग मे एतेक अनवधान भए गेल छी जे बजबहुक ठेकान नहि अछि । जे कियो सुनत से की कहत । "6

सुंदर संयोग नाटक चारि अंक मे विभाजित अछि ।श्रृंगार रस प्रधान अछि । एहि मे हास्य करूण रसक समावेश सेहो भेल अछि , गीत प्रधान अछि कारण गीतहिक माध्यमे कथा बस्तुक विस्तार भेल अछि। सुंदर संयोग नाटकक कथानक सामान्य प्रेम कथाक परिधि मे नहि राखल जा सकैछ । मैथिल समाज मे प्रचलित नारी यातनाक कथा । मुदा एकर कथावस्तु रोमांटिक प्रणय भावक थिक जकर अंत सुखान्तमूलक अछि । कथावस्तुक परिणति ओ पूर्णताक लेल जाहि प्रकारेँ एहि नाटक मे घटना विन्यास कयल गेल अछि ओ स्वभाविको अछि ,मैथिल जीवनक अनुकुलो अछि तथा प्रणयाभावक मधुर उद्वेलन सँ मर्मस्पर्शियो अछि । एकर कथोपकथन मे शुद्ध मैथिली गद्यक प्रयोग भेल अछि ।बीच बीच मे मंच निर्देश सेहो देल गेल अछि । एकर चरित्रांकन मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषणात्मक जे प्रवृति अछि से एहि नाटक कँ अत्याधुनिक बना दैत अछि ।

प्रो० मायानंद मिश्रक कथन छनि - " पं०जीवन झा एहि नाटक मे सर्वथा दुर्लभ छल जे इयो बहुत कम नाट्य कृतिमे भेटैत अछि । यैह थिक सुंदर संयोगक विशिष्टता जाहि कारणें ई कृति अविस्मरणीय अछि । वस्तुतः सुंदर संयोग मैथिली नाट्य इतिहासक एकटा घटना थिक ।"7

निष्कर्ष रूपेँ प्रो० प्रेमशंकर सिंहक एहि कथन कँ देखल जाए - "अक्षर पुरुष जीवन झा क नाटकादि मे मिथिलाक सामाजिक , सांस्कृतिक एवं थिक जीवनक जाहि रूपक दिग्दर्शन होइछ तकर सार्थकता एहि मे अछि जे नाट्यकार ओकर यथार्थ समाधान

ओहि समस्याक अंतर्गत कयलनि । युग विधायक जीवन झाक एहि विचारधाराक अत्यंत व्यापक प्रभाव हुनक समसामयिक एवं परवर्ती नाटककार पर पड़लनि, जे परवर्ती युगक नाटककार लोकनिक हेतु एक नव लोक सदृश प्रतिभाषित भेल । हुनक नाट्यक धार सामाजिक , सांस्कृतिक एवं थिक स्थितिक ज्ञान निश्चये विस्तृत छलनि। ओ समसामयिक समाज मे घटित होइत घटना कँ अपन अनुभवक धार पर विश्लेषण कयलनि । बीसम शताब्दीक प्रथम दशक मैथिली नाट्य साहित्यान्तर्गत अक्षर पुरूष जीवन झा नाटकक क्षेत्र मे सामाजिक ,सांस्कृतिक एवं थिक

स्थितिक प्रसंग मे एक कीर्तिमान स्थापित कयलनि जे एहि साहित्यक निमित्त एक अविस्मरणीय ऐतिहासिक घटना थिक जे अधुनातन संदर्भ मे मैथिल समाजक हेतु दिशा बोधक प्रमाणित भेल l" 8

अंत मे एहि नाटकक प्रसंग डॉ जयकांत मिश्रक कथन कँ देखल जाए - "while characterzation is selender, the sizing of a situation which is true to the life of the mithila people is remarkable feature of this drama ." 9

अध्यक्ष,

मैथिली विभाग
सी० एम० जे० कॉलेज ,खुटौना

सन्दर्भ ग्रंथक सूची

1. *प्रो० मायानन्द मिश्र- मै०सा०इति०,किसुन संकल्प लोक , सुपौल- पृ० 288- 89.*

2 . सं० चंद्र नाथ मिश्र अमर ओ डॉ०राम देव झा - कविवर जीवन झा रचनावली ,मैथिली अकादमी पटना- पृ० - 2

3. सं० - मधुकान्त झा - ० मै० ना० पहिल शताब्दी , चेतना समिति , पटना - पृ०- 22

4. सं० - चंद्र नाथ मिश्र अमर ओ डॉ० राम देव झा मै० अ० पटना , पृ० 116.

5. देखू - ओएह, पृ० 117

6 .देखू - ओएह , पृ० 109

7. प्रो० मायानंद मिश्र , मै० सा० इतिहास, किसुन सं० लोक , सुपौल - पृ० 289

8. सं० मधुकान्त झा , ० मै० ना० प०श० , चेतना समिति ,पटना पृ० 16

9. डॉ० भीमनाथ झा , परिचायिका , भवानी प्रका०, पटना - पृ० 32